सिन्धु घाटी की सभ्यता या सैन्धव सभ्यता या हड़प्पा सभ्यता या कांस्ययुगीन सभ्यता या ताम्रपाषाण सभ्यता।

v.v.I सर्वेक्षण एवम उत्खनन का संक्षिप्त इतिहास

(1) — हड़प्पा का सर्वप्रथम उल्लेख चार्ल्स मैसन नामक एक अंग्रेज द्वारा 1826 ई० में किया गया।

(2) - 1834 ई० में इन खण्डहरों के बारे में कर्नल बर्न्स ने भी देखा

(3) कनिंघम ने 1853 और 1856 ई० में इन टीलों का सर्वेक्षण किया

नोट कनिंघम ने हड़प्पा की पहचान चीनी यात्री ह्वेनसाँग द्वारा अपनी भारत यात्रा के दौरान देखे गये "पो-फा-तो" या पो-फा-तो-दो" के साथ की।

(4) 1886 ई० में एम. एल. डेम्स एवम 1912 ई० में जे. एफ. फ्लिट ने कुछ हड़प्पा कालीन मुद्रांए प्रकाशित की

(5) 1921 ई० में दयाराम साहनी ने उक्त स्थल का पुनः अन्वेषण किया और तब 1921 ई० में पहली बार उत्खनन प्रारम्भ हुआ।

(6) भारतीय पुरातत्व विभाग के महानिदेशक सर जॉन मार्शल ने 1924 ई० में यह घोषणा की कि सिन्धु घाटी में एक नयी सभ्यता खोज ली गयी है

नोट - सर जॉन मार्शल की यह घोषणा लन्दन से प्रकाशित एशियाटिक रिसर्च नामक पत्रिका में की गई थी।

(7) विगत 8-9 दशकों में हड़प्पा सभ्यता की लगभग 1500 से भी अधिक स्थानों का पता हो चुका है और 400 स्थानों का उत्खनन किया जा चुका है।

नया दृष्टिकोण

लगभग 80 वर्ष पहले तक आर्यों के आगमन के पूर्व के भारतीय इतिहास एवं संस्कृति के सम्बन्ध में हमारे पास कोई स्पष्ट एवं निश्चित प्रमाण नहीं था।

आर्यों के साहित्य वेदों से ही पहली बार हमें भारत के सामाजिक एवं धार्मिक विचारों तथा राजनीतिक एवं तथा आर्थिक अवस्थाओं की विस्तृत जानकारी मिला इसलिए यह अवधारणा हो गया कि व्यवहारिक दृष्टि से भारत का इतिहास इस काल से प्रारम्भ किया जाय और भारतीय संस्कृति की रूप रेखा का निर्माण का आरम्भ आर्य सभ्यता से हो किन्तु 1921-22 ई० में एक ऐसी सभ्यता की खोज हुई जिससे एक नये युग का प्रादुर्भाव हुआ और इस धारणा में यह परिवर्तन हुआ की भारतीय सभ्यता एवं संस्कृती का प्रारम्भ 1500BC से न होकर इससे बहुत पहले ही हो चुका था 1921 ई० में भारत के पश्चिमोत्तर भाग में एक ऐसी कास्ययुगीन सभ्यता प्रकाश में आई जो किसी भी दृष्टि से विश्व के प्राचीनतम कास्य युगीन सभ्यता से निम्न कोटी की नहीं थी इस सभ्यता के प्रकाश में आजाने का पश्चात भारतीय सभ्यता एवं संस्कृति का प्रारम्भ आर्यों का आगमन से न होकर सैन्धव सभ्यता से होने लगी यह एक नगरीय सभ्यता थी हड़प्पा सभ्यता की निर्णायक खोज ने भारत को विश्व के ऐतिहासिक मान चित्र पर, प्राचीन सभ्यता के उदय की जन्म स्थली मिस्र, मेसोपोटामिया एवं चीन के समतुल्य ला दिया। इन खोजों के द्वारा सहस्र हमारा इतिहास तीन हजार वर्ष पिछे चली गयी

[उत्खननो का संक्षिप्त विवरण]

A — हड़प्पा — (1) 1921 ई० में दयाराम साहनी ने
प० पंजाब पाकिस्तान
हड़प्पा स्थल का अन्वेषण कार्य प्रारम्भ किया और 1921 ई० में ही पहली बार उत्खनन कार्य प्रारम्भ हुआ जो 1924-25 तक जारी रहा

Scanned by TapScanner

② 1926 - 27 से 1933 - 34 ई० तक माधो स्वरूप वत्स के निर्देशन में उत्खनन कार्य सम्पन्न हुआ

③ 1946 ई० में ह्वीलर ने पुनः उत्खनन कराया

B - मोहनजोदड़ो (सिन्ध पाकिस्तान) ① मोहन जोदड़ों का उत्खनन 1922 ई० में राखलदास बनर्जी ने प्रारम्भ किया।

② - 1923-24 ई० में माधो स्वरूप वत्स ने इसका उत्खनन किया।

③ जिन महान पुरातत्वविदों ने इसके उत्खनन में हिस्सा लिया उनके नाम इस प्रकार है - मैके, काशीनाथ दीक्षित, हारगृव्ज, दयाराम साहनी इत्यादि

④ 1950 ई० में डा० ह्वीलर ने इसका उत्खनन कराया

⑤ 1964 एवं 1966 ई० में अमेरीका के पुरातत्वविद डेल्स ने यहां उत्खनन कराया।

C - चान्हूदड़ो (सिन्ध पाकिस्तान) ① इसका उत्खनन सर्वप्रथम 1931 ई० में N.G. Majumdar ने कराया

② 1935 ई० में मैके ने इसका उत्खनन कराया

D - सुतकांगेडोर (बलूचिस्तान) - ① - इसे प्रकाश में लाने का श्रेय आर० एल० स्टीन को है जिन्होने 1927 ई० में इसकी खोज की।

② 1962 ई० में इसका उत्खनन कार्य जार्ज डेल्स ने किया।

③ E कोट दिजी (सिन्ध) इसे प्रकाश में लाने का श्रेय धुर्ये महोदय का है जिन्होने 1935 में खोज की

① 1935 तथा 1958 में इसका उत्खनन - फजल अहमद खाँ - ने कराया।

F रोपड़ (पंजाब) यज्ञ दत्त शर्मा के निर्देशन में 1935 to 1956 तक इसका उत्खनन हुआ।

G बनवाली (हरियाणा) या (हिसार जिला) बनावली - रविन्द्र सिंह विष्ट के द्वारा 1973-74 ई० में इसका उत्खनन कराया गया।

Scanned by TapScanner

75

H// राखीगढ़ी – हरियाणा – 1970 में सूरज भान एवं आचार्य भगवान देव ने इसका उत्खनन कराया

I - मिताथल (हरियाणा) सूरजभान ने 1968 ई० में इसका उत्खनन कार्य कराया।

J/ कालीबंगा (राजस्थान) (i) A. घोष ने 1953 में इसका उत्खनन कराया
(2) B.K Thaber B.B. Lal - ने 1961 में इसका उत्खनन कराया

K रंगपुर (गुजरात) (i) माधोस्वरूप वत्स ने 1931 ई० मे इसका उत्खनन कराया
(ii) मोरेश्वर दिक्षित — ने 1947 में इसका उत्खनन कराया
(iii) श्री रंगनाथ राव - ने 1953 में इसका उत्खनन कराया

L// लोथल (गुजरात) एस. आर. राव ने 1957 में इसका उत्खनन कराया

M// सुरकोटडा – (गुजरात) जगपती जोशी ने 1964 में इसका उत्खनन कराया।

N. धौलावीरा (गुजरात) 1991-92 में R.S. Wist ने इसका उत्खनन कराया।

O// आलमगीरपुर (U.P.) यज्ञदत्त शर्मा ने 1958 में इसका उत्खनन कराया।

प्रमुख स्थलों का क्षेत्रीय विस्तार

V.V.I A. सिन्ध – [पाकिस्तान] – मोहनजोदड़ो, अमिरी, कोटदीजी, पाण्डीवाही, गाजीशाह, कोत्रास बुथी, तरकाईकिला, रहमान ढेरी, अल्लाहदीनो, चान्हूदड़ो, रोहरी, लोहुमजुदाड़ो, अलीमुराद, मूकर, झांगर.

B बलुचिस्तान (पाकिस्तान) मेहरगढ़, दम्ब सदत, किली गुल-मुहम्मद, राना घुण्डाई, शाही टुम्प, अंजिरा, नल, पुली, निंदोवाड़ी, गुमला, डाबरकोट, बाला कोट

C अफगानिस्तान मुण्डीगक, सोरत्र घई

D (पश्चिमी पंजाब) (पाकिस्तान) — जलील पुर, गेनरीवाल, सेघनवाला, डेराबर

E गुजरात (भारत) धौलाविरा, लोथल, सुरकोटडा, भगत राव, रंगपुर, रोजदी, देशालपुर

F राजस्थान — कालीबंगा, श्रीसवल, बारा

G U.P. (भारत) — आलमगीर पुर, मानपुर, बड़गाँव

H हरियाणा — बनवाली, राखीगढ़ी, भगवानपुरा

I पंजाब — रोपड़ - सरायखोल, कोटलानिहंगखाँ,

नगर क्षेत्रों की नदिय स्थिती

केन्द्र		नदिय स्थिती
① मोहन जोदडो		सिन्धु
② हड़प्पा		रावी
③ कालीबंगा		घग्घर
④ लोथल		भोगवा
⑤ दैमाबाद (महाराष्ट्र)	—	प्रवर
⑥ चान्हुदारो	—	सिन्धु नदी
⑦ कोटदीजी	—	सिन्धु
⑧ देशालपुर	—	भदर
⑨ रोजदी	—	भदर
⑩ मान्डा (काश्मीर)	—	चेनाब
⑪ बनवाली	—	रंगोई
⑫ गुमला	—	सिन्धु
⑬ रंगपुर	—	भदर

Scanned by TapScanner

(14) बाला कोट —— विदर

(15) भगवानपुरा —— सारस्वती

(16) राखीगढ़ी —— गाघर

(17) आलमगीरपुर —— हिंडन

(18) कोटला निहंगखान —— सिरवु

(19) सुतकागेंडोर —— दस्क

(20) रोपड —— सतलज नदी

(21) सुत्काकोह —— शादीकौर